

त्रिपुरा में हिंदी भाषा व साहित्य: एक अवलोकन

डॉ. काली चरण झा

15 अक्टूबर, 1949ई. में भारतीय संघ में विलय से पूर्व त्रिपुरा एक देशी रियासत था। ऐसा माना जाता है कि प्राचीन त्रिपुरा का विस्तार व्यापक था। "यह तथ्य है कि प्राचीनकाल में त्रिपुरा का सीमा विस्तार बंगाल की खाड़ी तक था, जब उसके शासकों का प्रभुत्व गारो हिल्स से अराकान तक था। गौरतलब है कि आज भी पहाड़ी लोग त्रिपुरा शब्द का उच्चारण करते हैं न कि त्रिपुरा का। त्रिपुरा का सम्बन्ध प्राचीन राजा दूहायु, त्रिपुर और त्रिलोचन से भी जोड़ा जाता है। जो भी हो इतना तो तय है कि महाभारत समय तक इस प्रदेश की एक स्पष्ट पहचान स्थापित हो चुकी थी। इसीलिए भारतीय सभ्यता और संस्कृति को जानने के लिए पूर्वोत्तर भारत को भी जानना होगा। हमें लगता है कि पूर्वोत्तर हमसे बहुत दूर है किन्तु जब हम इसका ऐतिहासिक व सांस्कृतिक अध्ययन करते हैं तो हम पाते हैं कि यहाँ के रहवासियों का सम्बन्ध भारत के शेष भाग से सदियों से रहा है। अपने प्राकृतिक सौन्दर्य, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक विशिष्टताओं तथा सामरिक व वाणिज्यिक विशिष्टता के कारण त्रिपुरा हमारे लिए विशेष महत्त्व रखता है।

भाषाई दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत एक विलक्षण चित्र प्रस्तुत करता है। हकीकत तो यह है कि "उत्तर-पूर्व भारत के एक विस्तृत एवं जटिल नृजातीय व सामाजिक भाषाई बनावट में विभिन्न भाषा परिवारों की लगभग 420 भाषाएँ एवं बोलियाँ बोली जाती हैं। उपर्युक्त तथ्य इस क्षेत्र की भाषा सम्बन्धी समस्याओं की एक विलक्षणता एवं विशिष्टता प्रदान करता है। यह विस्तृत नृजातीय क्षेत्र सात राज्यों की 209 अधिसूचित जनजातियों और गैर-जनजातियों की विषमंग आबादी को समाहित करता है। पूर्वोत्तर भारत में स्थित तथा 10491.69 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला वर्तमान त्रिपुरा भारत का छोटा-सा प्रदेश है, जिसकी सीमाएँ बांग्लादेश, मिजोरम एवं असम से लगी हुई हैं। यहाँ की कुल जनसंख्या 36,71,032 में से जनजातियों की जनसंख्या 11.66.813 है। यहाँ विभिन्न प्रकार की उन्नीस मूल जनजातियों का अधिवास है यहाँ की मूल जनजातियों की भाषाओं को तीन मुख्य भाषाई वर्गों में बाँटा गया है-बोड़ो वर्ग, कूकी चीनी वर्ग तथा अराकान वर्ग। बोड़ो वर्ग के अंतर्गत आठ जनजाति वर्ग हैं- त्रिपुरी, जमातिया, रियांग, नोआतिया, उचाई, कोलाई, मुडासिंह और रूपिणी। ये सभी जनजातियाँ बोड़ो वर्ग के अंतर्गत मानी जाती हैं और इनका मूल मंगोलाइड है। इनकी भाषा को चीनी-तिब्बती वर्ग के अंतर्गत तिब्बती वर्मी समूह में वर्गीकृत किया गया है। इन्हीं आठ आदिवासियों की सम्मिलित भाषा को 'कॉकब्रॉक' कहा जाता है। कूकी-चीनी वर्ग के अंतर्गत डारलॉग, कुकी, हलम, लुसाई, मालसोम, कईपेंग, बोंग आदि आदिवासी आते हैं। यह कूकी-चीनी वर्ग मूलतः चीनी मूल से सम्बन्ध रखते हैं और तिब्बती-बर्मी भाषा बोलते हैं। मोग और चकमा आदि आदिवासी अराकान वर्ग के अंतर्गत माने जाते हैं क्योंकि ये मूलतः अराकान जनजातियों से सम्बन्धित हैं और इनकी भाषा अराकानी मानी जाती है। इन मूल निवासियों के अतिरिक्त त्रिपुरा में कुछ अप्रवासी आदिवासियाँ भी हैं, जो सदियों पहले रोजगार की तलाश में यहाँ आए अथवा लाए गए और यहीं बस गए हैं। इन आदिवासी समूहों में मुंडा, संथाल, उड़ाऊँ, भील, लेपचा, खसिया तथा भूटिया आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

त्रिपुरा की वर्तमान भाषाई स्थिति के संदर्भ में यह तथ्य अवलोकनीय है कि कुछ ऐतिहासिक कारणों से बांग्ला भाषा इस प्रदेश की महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली भाषा रही है। "राज्य के तत्कालीन शासकों ने बांग्ला को राजकीय एवं प्रशासनिक भाषा के रूप में संरक्षण दिया। अब तो यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्वयं को स्थापित कर चुकी है। करीब अस्सी फीसदी लोग अपने दैनिक जीवन में बांग्ला भाषा का इस्तेमाल करते हैं। यहाँ तक कि त्रिपुरी (कॉकवरक) बांग्ला लिपि में लिखी जाती है। यही कारण है कि त्रिपुरी लोग बांग्ला समझ एवं बोल लेते हैं। त्रिपुरियों के प्रबुद्धवर्ग की बांग्ला भाषा पर महारत हासिल होती है। ये बांग्ला भाषा पर मातृभाषा जैसी पकड़ रखते हैं। इनकी बौद्धिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियाँ उतनी ही उच्च हैं जितनी किसी अन्य उन्नत समुदाय की। यहाँ यह उल्लेख करना अप्रासंगिक नहीं होगा कि कॉकबरॉक भाषा वर्तमान में बांग्ला अथवा रोमन लिपि में लिखी जाती है क्योंकि इसकी अपनी कोई लिपि नहीं रही है।

वर्तमान में त्रिपुरा में बांग्ला, कॉकबरॉक और अंग्रेजी राजकीय भाषा के रूप में प्रचलित है और कहना न होगा कि यही बांग्ला, कॉकबरॉक और अंग्रेजी भाषाएँ पठन पाठन के माध्यम भी हैं। यहाँ हिंदी भाषा शिक्षा का माध्यम नहीं है बल्कि एक भाषा विषय के रूप में कुछ विद्यालयों, पाँच महाविद्यालयों (चार सरकारी तथा एक प्राइवेट) तथा त्रिपुरा विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) में पढ़ाई जाती है। महाविद्यालय स्तर पर हिंदी पाठ्यक्रम डिग्री स्तर पर तीन स्तरों पर निर्धारित किया गया है। प्रतिष्ठा के रूप में, ऐच्छिक विषय के रूप में तथा एम.आई.एल. के रूप में। जबकि त्रिपुरा विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) में आई.एम. डी. और स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है साथ ही पीएच.डी. पाठ्यक्रम भी हिंदी में उपलब्ध है। त्रिपुरा विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए एक वर्षीय अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाता है।

वस्तुतः इन्हीं परिस्थितियों में त्रिपुरा में हिंदी का प्रचार-प्रसार, अनुवाद व रचनात्मक लेखन को समझा जा सकता है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर का यह विचार था कि कई भाषाओं के प्रयोग के कारण राममनोहर राय सभी धर्मों को समझ पाए और इसलिए वे देश के सच्चे प्रतिनिधि हैं। वस्तुतः कोई भी भाषा अच्छी तरह सीखना आज के समावेशी जातीय आत्म पहचान, उच्चतर सौन्दर्यबोध, विश्लेषण क्षमता और संवेदनशीलता के उन्मेष की प्रक्रिया है। वस्तुतः त्रिपुरा के नवयुवक अधिकाधिक संख्या में हिंदी को अपनाते हैं तो उनके सर्वांगीण विकास के लिए उपयुक्त माध्यम सिद्ध होगी। एक संपर्क भाषा के रूप में इसकी उपयोगिता स्वयंसिद्ध है। सबसे बड़ी बात यह है कि हिंदी आज रोजी-रोटी पाने का माध्यम भी बन चुकी है। इसकी प्रयोजनीयता का क्षेत्र विस्तृत हो चुका है। यह प्रशासन, कार्यालय, वाणिज्य, विधि, विज्ञान एवं तकनीकी, संगणक, विज्ञापन, जनसंचार, मनोरंजन आदि क्षेत्रों की भाषा बन चुकी है।

अपने विशाल शब्द भण्डार, वैज्ञानिकता, शब्दों और भावों को आत्मसात करने की प्रवृत्ति के साथ ज्ञान विज्ञान की भाषा के रूप में अपनी उपयोगिता पूरी दुनिया में साबित कर रही है। यह दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक बोली, पढ़ी लिखी और समझी जाती है। वास्तव में, हिंदी की जड़ें गहरी हैं। 'भाषा महज अभिव्यक्ति का साधन नहीं है, भाषा में मनुष्य की अस्मिता स्वर पाती है। उसमें सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति भी होती है। समय के साथ होने वाले सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तनों की अनुगूँज उसमें सुनाई पड़ती है।' हिंदी की इसी महत्ता को आत्मसात करते हुए त्रिपुरावासी हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए आगे आ रहे हैं। त्रिपुरा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, धर्मानगर के श्री रमेंद्र कुमार पाल, डॉ. शुभांशु धामः त्रिपुरा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, अगरतला के श्री हरिपद देव तथा सुश्री अपर्णा देव त्रिपुरा विश्वविद्यालय के प्रो. विनोद कुमार मिश्र आदि लोग हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा संवर्धन में जुटे हुए हैं।

जहाँ तक हिंदी में रचनात्मक साहित्य का प्रश्न है तो त्रिपुरा में इसका अभाव है। इस क्रम में प्रो. विनोद कुमार मिश्र का भी मानना है कि त्रिपुरा में हिंदी भाषा में रचित रचनात्मक साहित्य की कोई परम्परा अभी तक विकसित नहीं हो पाई है लेकिन अनूदित साहित्य धीरे-धीरे विस्तार पा रहा है। 'यद्यपि स्व. रमेंद्र कुमार पाल का एक उपन्यास "देवी माँ" के नाम से हिंदी में प्रकाशित हो चुका है इसके साथ ही उन्होंने कुछ कविताएँ तथा कहानियाँ भी हिंदी में लिखी हैं किन्तु दो-एक को छोड़कर अधिकांश रचनाओं का प्रकाशन नहीं हो पाया है। डॉ. शुभांशु धाम ने कुछ कविताएँ एवं लेख हिंदी में लिखे हैं जिसका प्रकाशन 'समन्वय पूर्वोत्तर', 'लहक', 'शब्दनील', 'कंचनजंघा', 'राष्ट्रभाषा' आदि पत्र-पत्रिकाओं के विभिन्न अंकों में हुआ है। श्री शुभांशु धाम द्वारा लिखित तथा प्रकाशित कुछ महत्वपूर्ण कविताओं के नाम हैं- अभिजात्य, अभिलाषाएँ, नारी हूँ मैं, गणतंत्र दिवस, मुझे प्यार है, अकेला हूँ मैं, कविता, दर्पण, वसंत, हिंदी हमारी शान आदि।

वस्तुतः त्रिपुरा में बांग्ला और कॉकबरक भाषा में लिखित साहित्य से हिंदी में अनुवाद कार्य अवश्य हो रहे हैं। इस कार्य में केन्द्रीय हिंदी निदेशालय महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है जो अनुदान देकर, कार्यशालाओं का आयोजन कर कॉकबरक भाषा में लिखित साहित्य का अनुवाद हिंदी में करने को प्रोत्साहित करता है, जैसे कॉकबरक लोक साहित्य (2016 ई.) हिंदी कॉकबरक अध्येता कोश आदि। इसी प्रकार 'समन्वय पूर्वोत्तर' पत्रिका के माध्यम से यहाँ के लेखक विविध विषयों पर आलेख लिखकर हिंदी भाषा व साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं। अभी हाल ही में सुधन्य देववर्मा द्वारा कॉकबरक भाषा में लिखित उपन्यास का हिंदी अनुवाद (2021 ई.) 'पहाड़ की गोद में' नाम से चंद्रकला पाण्डेय और मिलन रानी जमातिया ने किया है। यह उपन्यास त्रिपुरा के जनजातीय जीवन पर आधारित प्रथम प्रकाशित उपन्यास के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसी तरह त्रिपुरा के जनजातीय देवता गौरिया पर हिंदी भाषा में एक पुस्तक "त्रिपुरा के गौरिया लोकगीत" नाम से वर्ष 2019ई. में प्रकाशित हुआ है। वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित तथा कृपाशंकर चौबे द्वारा संपादित 'हिंदी और पूर्वोत्तर' नामक पुस्तक में भी त्रिपुरा के कुछ लेखकों के लेख संगृहीत हैं।

यह सही है कि त्रिपुरा में हिंदी भाषा में रचनात्मक साहित्य का सृजन बहुत कम हुआ है लेकिन अनूदित साहित्य से हिंदी क्रमशः संवर्धित हो रही है। साथ ही यहाँ के युवाओं में बोल-चाल की भाषा के रूप में

हिंदी धीरे-धीरे काफी लोकप्रिय हो रही है। वस्तुतः जैसे-जैसे हिंदी की महत्ता स्थापित हो रही है और उसका प्रचार-प्रसार हो रहा है, यहाँ के रचनाकार हिंदी में साहित्य सृजन की ओर अवश्य उन्मुख होंगे और हिंदी का रचनात्मक साहित्य क्रमशः संवर्धित होता जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ:

1. त्रिपुरा डिस्ट्रिक्ट गजेटीयर, गवर्मेण्ट ऑफ त्रिपुर, अगरतला, पृष्ठ ।
2. सैम्युल जान, 'लैंग्वेज एंड नेशनलिटी इन नार्थ ईस्ट इंडिया', इकोनोमी एंड पोलिटिकल विकली, खंड XXV III. नं। 3-4 (जनवरी 1993). पृष्ठ 91-92
3. trci-tripura-gov-in
4. त्रिपुरा, एस.एन. गुहा ठाकुराता (अनुवाद संजय सिंह). पृष्ठ 47. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, प्रथम संस्करण, वर्ष 2013ई.
5. पूर्व महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय तथा अध्यक्ष, हिंदी विभाग त्रिपुरा विश्वविद्यालय डॉ. शुभांशु धाम, त्रिपुरा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, धर्मानगरसे हुई वार्ता पर आधारित

- डॉ. काली चरण झा
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
त्रिपुरा विश्वविद्यालय